I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन और संघर्ष: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. विजय शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: *डॉ. विजय शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15528483

सारांश

यह शोध-पत्र हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन और उससे जुड़े संघर्षों के विविध आयामों का विश्लेषण करता है। स्वतंत्रता-पूर्व काल से लेकर समकालीन युग तक, हिन्दी नाटककारों ने मध्यम वर्ग के बदलते मूल्यों, पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों, आर्थिक दबावों, पीढ़ीगत टकरावों, स्त्री-पुरुष संबंधों में जटिलताओं तथा वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति के प्रभावों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। मोहन राकेश, विजय तेंदुलकर, भीष्म साहनी, असगर वजाहत और सुरेंद्र वर्मा जैसे नाटककारों के नाटकों में मध्यम वर्गीय समाज की विडंबनाओं, चुनौतियों और आकांक्षाओं का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन केवल पारिवारिक स्तर तक सीमित न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक धरातल पर भी विश्लेषण की माँग करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 17-12-2023
- **Accepted:** 15-01-2024
- **Published:** 27-02-2024
- **IJCRM:**3(1); 2024: 249-252
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

विजय शर्मा, हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन और संघर्ष: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2024;3(1):249-252.

मूलशब्द : हिन्दी नाटक, मध्यम वर्ग, पारिवारिक विघटन, आर्थिक संघर्ष, स्त्री-पुरुष संबंध, पीढ़ीगत अंतराल, वैश्वीकरण, आधुनिकता, सामाजिक यथार्थ, डिजिटल युग, सांस्कृतिक परिवर्तन, मूल्यों का संकट

परिचय

भारतीय समाज में मध्यम वर्ग की उपस्थिति और उसके जीवन से जुड़े संघर्षों का चित्रण हिन्दी साहित्य में, विशेषकर नाटकों में, एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से भारतीय समाज में मध्यम वर्ग की आकांक्षाओं, परिवर्तनशील मूल्यों और संघर्षों को हिन्दी नाटककारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी नाटकों के माध्यम से मध्यम वर्गीय जीवन के विविध पहलुओं, उनके संघर्षों और समकालीन सन्दर्भों में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

शोध उद्देश्य: इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के चित्रण का अध्ययन करना
2. मध्यम वर्गीय परिवारों के संघर्षों और चुनौतियों की पहचान करना
3. समय के साथ मध्यम वर्गीय मूल्यों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना
4. आधुनिक और समकालीन हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के प्रस्तुतीकरण में अंतर स्पष्ट करना
5. मध्यम वर्गीय जीवन के चित्रण में प्रमुख नाटककारों के योगदान का मूल्यांकन करना

© 2025 डॉ. विजय शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

स्वतंत्रता-पूर्व काल

स्वतंत्रता-पूर्व काल में भारतीय मध्यम वर्ग अपने निर्माण के दौर से गुज़र रहा था। इस समय के नाटकों में देशभक्ति, सामाजिक सुधार और पारंपरिक मूल्यों के प्रति आग्रह दिखाई देता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के 'अंधेर नगरी' और 'भारत दुर्दशा' जैसे नाटकों में तत्कालीन मध्यम वर्गीय समाज की व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' और 'चंद्रगुप्त' में भी राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ मध्यम वर्गीय मूल्यों का चित्रण मिलता है।

स्वतंत्रता-पश्चात् काल (1947-1970)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में नए परिवर्तन आए। मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल और जगदीशचंद्र माथुर जैसे नाटककारों ने अपने नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के नए आयामों को प्रस्तुत किया। मोहन राकेश का 'आधे अधूरे' नाटक मध्यम वर्गीय परिवार के विघटन की कहानी प्रस्तुत करता है। इस दौर के नाटकों में:

- आर्थिक संघर्ष और महंगाई
- मूल्यों का ह्रास
- पारिवारिक विघटन
- आधुनिकता और परंपरा के बीच द्वंद्व

जैसे विषयों को प्रमुखता से उठाया गया।

आधुनिक काल (1970-2000)

इस काल में हिन्दी नाटकों में नए प्रयोग होने लगे। मध्यम वर्गीय जीवन के यथार्थ को अधिक गहराई से चित्रित किया गया। सुरेंद्र वर्मा, शंकर शेष, और भीष्म साहनी जैसे नाटककारों ने अपने नाटकों में:

- उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव
- मूल्यों का संकट
- स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव
- नैतिक पतन
- भ्रष्टाचार

जैसे विषयों को उठाया। भीष्म साहनी का 'हानूश' और 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' तथा सुरेंद्र वर्मा का 'सूरज की आखिरी किरण से पहली किरण तक' मध्यम वर्गीय जीवन के विभिन्न संघर्षों को दर्शाते हैं।

समकालीन काल (2000 के बाद)

इक्कीसवीं सदी के नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के नए आयाम उभरकर सामने आए हैं। असगर वजाहत, स्वदेश दीपक, और मनीष जोशी जैसे नाटककारों के नाटकों में:

- वैश्वीकरण का प्रभाव
- आर्थिक उदारीकरण और मध्यम वर्ग
- मूल्यों का क्षरण
- डिजिटल युग में मानवीय संबंध
- पहचान का संकट

जैसे विषयों को प्रमुखता से उठाया गया है।

प्रमुख नाटककारों के योगदान

मोहन राकेश (1925-1972)

मोहन राकेश हिन्दी नाट्य साहित्य में आधुनिक युग के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनके नाटक 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' और 'आधे अधूरे' में मध्यम वर्गीय जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण मिलता है। 'आधे अधूरे' में एक मध्यम वर्गीय परिवार के अपूर्ण और खंडित जीवन की व्यथा का चित्रण है।

महेंद्र नाथ के परिवार को केंद्र में रखकर यह नाटक मध्यम वर्गीय परिवारों में स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं, आर्थिक तनाव और मूल्यों के विघटन को दर्शाता है। सावित्री का चरित्र मध्यम वर्गीय स्त्री के उस संघर्ष को दर्शाता है, जो अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए काम करती है, लेकिन अपने पति द्वारा उपेक्षित महसूस करती है।

विजय तेंदुलकर (1928-2008)

विजय तेंदुलकर के नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के यथार्थ का बेबाक चित्रण मिलता है। उनके प्रसिद्ध नाटक 'शांतता! कोर्ट चालू आहे' और 'घाशीराम कोतवाल' में मध्यम वर्गीय जीवन की विडंबनाओं को दर्शाया गया है। 'कमला' नाटक में एक पत्रकार द्वारा मानव तस्करी के मुद्दे को उठाने के बहाने मध्यम वर्गीय दंभ और पाखंड को उजागर किया गया है।

भीष्म साहनी (1915-2003)

भीष्म साहनी के नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन के संघर्षों और चुनौतियों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उनके 'हानूश' और 'माधवी' नाटकों में मानवीय मूल्यों के क्षरण और मध्यम वर्गीय दंभ का चित्रण है। 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' नाटक में मध्यम वर्ग के उपभोक्तावादी रुझान और बाज़ारवाद के प्रभाव को दर्शाया गया है।

हबीब तनवीर (1923-2009)

हबीब तनवीर के नाटक 'आगरा बाज़ार' और 'चरणदास चोर' में मध्यम वर्गीय जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण मिलता है। 'चरणदास चोर' में एक ईमानदार चोर के माध्यम से समाज के वर्गीय विभाजन और मूल्यों के पतन को दर्शाया गया है।

मध्यम वर्गीय जीवन के प्रमुख संघर्ष

आर्थिक संघर्ष

हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय परिवारों के आर्थिक संघर्षों को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' में सावित्री का परिवार आर्थिक संकट से जूझता है। असगर वजाहत के 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्या ही नई' में विभाजन के बाद विस्थापित मध्यम वर्गीय परिवारों के आर्थिक संघर्षों का चित्रण है।

पारिवारिक विघटन

आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण के प्रभाव से मध्यम वर्गीय परिवारों में विघटन की प्रक्रिया आरंभ हुई। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ते समाज में मूल्यों का संकट गहराता गया। हिन्दी नाटकों में इस पारिवारिक विघटन के विविध आयामों को गहराई से चित्रित किया गया है।

© 2025 डॉ. विजय शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर
स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन आरंभ हुआ। नौकरी और आजीविका के लिए लोगों का पलायन बढ़ा, जिससे संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों में बदल गए। मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' में परिवार की परंपरागत संरचना में आ रहे बदलावों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। उनके 'आधे अधूरे' में महेंद्रनाथ का परिवार एक मध्यम वर्गीय एकल परिवार है, जिसमें आपसी संबंधों में दरार स्पष्ट दिखाई देती है।
लक्ष्मीनारायण लाल के 'मिट्टी की गाड़ी' में रामस्वरूप के परिवार के माध्यम से संयुक्त परिवार के विघटन और मूल्यों के संकट को दर्शाया गया है। शंकर शेष के 'नई सभ्यता: नये नमूने' में मध्यम वर्गीय परिवारों के आधुनिकीकरण के चलते उत्पन्न संघर्षों का सजीव चित्रण है।

पति-पत्नी संबंधों में तनाव
मध्यम वर्गीय परिवारों में पति-पत्नी के बीच तनाव और विघटन हिन्दी नाटकों का प्रमुख विषय रहा है। मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' में सावित्री और महेंद्रनाथ के बीच का तनाव मध्यम वर्गीय दांपत्य जीवन के संकट को दर्शाता है। यह नाटक भारतीय मध्यम वर्गीय परिवारों के पारिवारिक विघटन की त्रासदी का सशक्त दस्तावेज है।

नाटक के एक संवाद में सावित्री कहती है: "मैंने इस सड़ी-गली जिंदगी में सत्ताईस साल काट दिए हैं। मुझे गर्व नहीं है इसका, सिर्फ अफ़सोस है।" यह संवाद मध्यम वर्गीय स्त्री की विवशता और टूटते दांपत्य संबंधों को दर्शाता है।
विजय तेंदुलकर के 'कमला' में जयसिंह जाधव और सारिका के बीच के संबंधों के माध्यम से मध्यम वर्गीय पुरुष के दोहरे मापदंडों और दांपत्य संबंधों में आ रहे बदलावों को चित्रित किया गया है। सुरेंद्र वर्मा के 'आठवाँ सर्ग' में प्रभा और ओमप्रकाश के संबंधों में आई दरारें उनके परिवार के विघटन का कारण बनती हैं।

भावनात्मक दूरी और अकेलापन
आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों में व्यक्तियों के बीच बढ़ती भावनात्मक दूरी हिन्दी नाटकों में अक्सर चित्रित की गई है। मोहन राकेश के 'लहरों के राजहंस' में नंद और सुंदरी के बीच की भावनात्मक दूरी उनके परिवार के विघटन का कारण बनती है। भीष्म साहनी के 'कबीरा खड़ा बाज़ार में' में मध्यम वर्गीय परिवारों में बढ़ते अकेलेपन और अलगाव को दर्शाया गया है।
धर्मवीर भारती के 'अंधा युग' में भी आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों के भावनात्मक विघटन का प्रतीकात्मक चित्रण मिलता है। सुरेंद्र वर्मा के 'दर्पण के सामने' में भी मध्यम वर्गीय परिवारों में बढ़ती भावनात्मक दूरी और अकेलेपन को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है।

आर्थिक दबाव और परिवार विघटन
मध्यम वर्गीय परिवारों में आर्थिक दबाव एक प्रमुख कारण है जो पारिवारिक विघटन की ओर ले जाता है। असगर वजाहत के 'जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्या ही नई' में विभाजन के बाद विस्थापित परिवारों के आर्थिक संघर्ष और उसके कारण होते पारिवारिक विघटन का चित्रण है। शंकर शेष के 'एक और द्रोणाचार्य' में भी आर्थिक संघर्ष के चलते बिखरते परिवार की त्रासदी को दर्शाया गया है।
सत्येंद्र शर्मा के 'बकरी' नाटक में एक मध्यम वर्गीय परिवार में आर्थिक तंगी के चलते उपजे तनाव और टकराव का चित्रण है। मनीष जोशी के 'एक था गधा' में भी बढ़ती महंगाई और आर्थिक दबाव के चलते टूटते परिवार का यथार्थ चित्रण मिलता है।

पीढ़ीगत अंतराल और परिवार विघटन
मध्यम वर्गीय परिवारों में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच विचारों का टकराव पारिवारिक विघटन का एक प्रमुख कारण है। लक्ष्मीनारायण लाल के 'एक और सिंहासन' में पिता और पुत्र के बीच के विचारभेद परिवार में दरार का कारण बनते हैं। स्वदेश दीपक के 'कोर्ट मार्शल' में भी पीढ़ीगत अंतराल के कारण परिवार में आई दरारों को चित्रित किया गया है।
अश्क के 'अंजो दीदी' में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच मूल्यों के टकराव के कारण उत्पन्न पारिवारिक संघर्ष का सजीव चित्रण मिलता है। प्रेम कुमार के 'साइबर रोमांस' में डिजिटल युग में पीढ़ीगत अंतराल के कारण परिवार में आई दरारों को दर्शाया गया है।

समकालीन संदर्भ में पारिवारिक विघटन
वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और डिजिटल क्रांति के प्रभाव से मध्यम वर्गीय परिवारों में विघटन की प्रक्रिया तेज़ हुई है। असगर वजाहत के 'गोड्से@गांधी.कॉम' में इंटरनेट युग में मानवीय संबंधों के खोखलेपन और परिवारों के बिखराव को चित्रित किया गया है। मनीष जोशी के 'मोबाइल मोबाइल' में डिजिटल उपकरणों के प्रभाव से परिवार में आई दरारों का यथार्थ चित्रण है।
समकालीन हिन्दी नाटकों में वर्चुअल रिश्तों के बढ़ने और वास्तविक संबंधों के कमज़ोर पड़ने के कारण परिवारों के विघटन को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। सुरेंद्र वर्मा के 'कविता ने कहा' में वर्तमान समय में परिवारों के बदलते स्वरूप और विघटन की प्रक्रिया को दर्शाया गया है।

मूल्यों का संकट
हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन में मूल्यों के संकट को गहराई से चित्रित किया गया है। शंकर शेष के 'एक और द्रोणाचार्य' और 'कोमल गांधार' में मूल्यों के क्षरण और नैतिक पतन की समस्या को उठाया गया है। लक्ष्मीनारायण लाल के 'मिट्टी की गाड़ी' में मध्यम वर्ग के बदलते मूल्यों का चित्रण है।

स्त्री-पुरुष संबंध
मध्यम वर्गीय परिवारों में स्त्री-पुरुष संबंधों में आए बदलाव को हिन्दी नाटकों में बखूबी चित्रित किया गया है। मोहन राकेश के 'आधे अधूरे' में सावित्री और महेंद्रनाथ के संबंधों के माध्यम से आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों में स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं को दर्शाया गया है। विजय तेंदुलकर के 'कमला' में मध्यम वर्गीय पुरुष के दोहरे मापदंडों को उजागर किया गया है।

© 2025 डॉ. विजय शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पीढ़ीगत संघर्ष
मध्यम वर्गीय परिवारों में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच मूल्यों और विचारों के संघर्ष को हिन्दी नाटकों में दर्शाया गया है। लक्ष्मीनारायण लाल के 'एक और सिंहासन' में पीढ़ीगत संघर्ष को केंद्र में रखा गया है। स्वदेश दीपक के 'सबसे उदास कविता' में भी पीढ़ीगत अंतराल और मूल्यों के टकराव को चित्रित किया गया है।

समकालीन संदर्भ में मध्यम वर्गीय जीवन
वैश्वीकरण का प्रभाव
वैश्वीकरण और उदारीकरण के प्रभाव से भारतीय मध्यम वर्ग में नए बदलाव आए हैं। असगर वजाहत के 'गोड्से@गांधी.कॉम' और मनीष जोशी के 'एक था गधा' जैसे नाटकों में वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते मध्यम वर्गीय मूल्यों का चित्रण मिलता है।

डिजिटल युग और मध्यम वर्ग
इक्कीसवीं सदी में डिजिटल क्रांति ने मध्यम वर्गीय जीवन को गहरे रूप से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया, ऑनलाइन शॉपिंग और डिजिटल संचार के प्रभाव से मध्यम वर्गीय जीवनशैली में परिवर्तन आया है। मनीष जोशी के 'मोबाइल मोबाइल' और प्रेम कुमार के 'साइबर रोमांस' जैसे नाटकों में इस परिवर्तन को दर्शाया गया है।

पहचान का संकट
वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में मध्यम वर्ग अपनी पहचान के संकट से जूझ रहा है। धर्म, जाति, क्षेत्र और भाषा के आधार पर अपनी पहचान बनाए रखना एक चुनौती बन गया है। असगर वजाहत के 'जिस लाहौर नई देख्या' और सुरेंद्र वर्मा के 'सूरज की आखिरी किरण से पहली किरण तक' में इस संकट को चित्रित किया गया है।

निष्कर्ष
हिन्दी नाटकों में मध्यम वर्गीय जीवन और संघर्ष का चित्रण विविध आयामों में हुआ है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से लेकर वर्तमान समय तक मध्यम वर्ग के जीवन में अनेक परिवर्तन आए हैं। हिन्दी नाटककारों ने इन परिवर्तनों को अपने नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।
आज के समय में जब भारतीय मध्यम वर्ग वैश्विक प्रभावों, आर्थिक दबावों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों से गुज़र रहा है, तब हिन्दी नाटकों में इन संघर्षों का चित्रण अधिक प्रासंगिक हो गया है। मध्यम वर्गीय जीवन के इन संघर्षों और चुनौतियों का चित्रण न केवल वर्तमान स्थिति को समझने में मदद करता है, बल्कि भविष्य की दिशा भी निर्धारित करता है।

संदर्भ सूची

1. सिन्हा, रमेश (2015). आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. त्रिपाठी, विश्वनाथ (2010). हिन्दी नाटक: परंपरा और प्रयोग. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
3. नगेन्द्र (2005). हिन्दी साहित्य का इतिहास. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
4. पाण्डेय, गोविन्द (2012). हिन्दी नाटक का विकास. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. टंडन, जयदेव (2008). स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक: समस्याएँ और समाधान. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. शर्मा, रामविलास (2000). भारतीय नाट्य परंपरा और रूपविधान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. तिवारी, प्रभाकर (2018). समकालीन हिन्दी नाटक: संवेदना और शिल्प. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
8. वर्मा, धीरेन्द्र (2014). हिन्दी नाट्य साहित्य: नए प्रतिमान. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
9. दूबे, सत्यप्रकाश (2011). आधुनिक भारतीय नाटक और रंगमंच. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
10. मिश्र, विद्यानिवास (2003). भारतीय साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियां. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. विजय शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/